Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP-PSC

राज्य सिविल सेवा

मेन्स

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

पेपर – 4 (A & B)

दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, लोक प्रशासन एवं केस स्टडी तथा उद्यमिता, प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास एवं केस स्टडी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	दार्शनिक, विचारक, समाज सुधारक	1
2	राष्ट्र की अवधारणा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा	21
3	मूल नैतिक अवधारणाएँ	27
4	भगवद्गीता का नीतिशास्त्र	31
5	मनोवृत्ति	33
6	अभिक्षमता एवं लोक सेवा हेतु आधारभूत मूल्य	42
7	संवेगात्मक बुद्धि	47
8	व्यक्तिगत भिन्नताएँ	52
9	मनोविकार एवं मनोचिकित्सा	54
10	मानवीय आवश्यकताएँ एवं अभिप्रेरणा	62
11	लोक प्रशासन में नैतिक सद्गुण एवं मूल्य	66
12	भ्रष्टाचार	76
13	केस स्टडी	94
14	उद्यमिता की अवधारणा एवं महत्व	104
15	उद्यमशीलता एवं नवाचार	106
16	उद्यमशीलता की प्रक्रिया सृजनशीलता, विचार सृजन, अनुवीक्षण एवं व्यवसाय योजना	109
17	नए उद्यम प्रबंधन एवं चुनौतियाँ	121
18	भारत में उद्यमिता का विकास	132
19	व्यावसायिक संगठन एवं प्रबंधन	136
20	प्रबंध- अवधारणा, महत्व, क्षेत्र, प्रबंध एवं प्रशासन	137
21	क्रय तथा सामग्री प्रबंधन	142
22	प्रबंध, संगठन, निर्देशन, नियंत्रण, समन्वय, निर्णयन, अभिप्रेरणा, नेतृत्व एवं संचा	145
23	समय प्रबंधन एवं संगठन	166

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	ब्रांडिंग, मार्केटिंग एवं नेटवर्किंग	170
25	लोक प्रशासन में प्रबंधन के महत्वपूर्ण आयाम	181
26	मानव संसाधन प्रबंध	184
27	वित्तीय प्रबंध - लोक प्रशासन में उनका कार्यक्षेत्र एवं महत्व	188
28	लोक कार्य क्षेत्र में तनाव प्रबंधन एवं विवाद प्रबंधन	190
29	बहुलता (अनेकता) का प्रबंधन एवं प्रशासन, जन प्रबंधन के अवसर एवं चुनौतियाँ	193
30	आपदा प्रबंधन	195
31	समग्र व्यक्तित्व विकास	198
32	सफलता की अवधारणा	208
33	असफलता से सीखना	213
34	सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन और प्रभावी रणनीतिया	215
35	नागरिक बोध	218
36	संस्था के प्रति निष्ठा	220
37	मतदाता जागरूकता	221
38	यातायात प्रबंधन	223
39	नशाखोरी की प्रवृत्ति	224
40	खाद्य पदार्थों में मिलावट	226
41	नाइट कल्चर	229
42	मूल्य आधारित जीवन	230
43	विधिक जागरूकता कार्यक्रम	232

1 Chapter दार्शनिक / विचारक,एवं समाज सुधारक

सुकरात

- एथेंस का एक यूनानी दार्शनिक जो पश्चिमी दर्शन के संस्थापकों में से एक है, और विचार की पश्चिमी नैतिक परंपरा का पहला नैतिक दार्शनिक है।

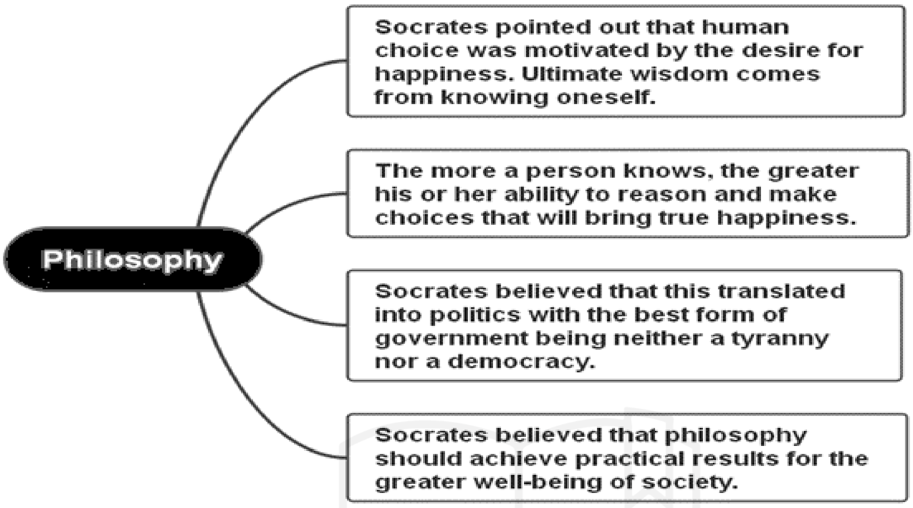

- पेरिकल्स एथेंस के स्वर्ण युग के दौरान पले-बढ़े, एक सैनिक के रूप में विशिष्ट सेवा की, लेकिन हर चीज और हर किसी के प्रश्नकर्ता के रूप में जाना जाने लगा।
- उनकी शिक्षण शैली सुकरातस पद्धति में ज्ञान देना शामिल नहीं था, बल्कि प्रश्न को स्पष्ट करने के बाद प्रश्न पूछना था , जब तक उनके छात्र अपनी समझ पर नहीं पहुँच।
- उन्होंने खुद कुछ नहीं लिखा, इसलिए उनके बारे में जो कुछ भी जाना जाता है, वह कुछ समकालीनों और अनुयायियों, विशेष रूप से उनके छात्र प्लेटो के लेखन के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।
- एथेंस के युवाओं को भ्रष्ट करने का आरोप लगाया और मौत की सजा सुनाई।
- पलायन न करने का विकल्प चुनते हुए, उसने जल्लाद के जहरीले हेमलॉक के प्याले को पीने से पहले अपने अंतिम दिनों को अपने दोस्तों की संगति में बिताया।

सुकरात के नैतिक विचार

सदाचार नैतिकता

- मुख्य रूप से आत्म-सुधार के माध्यम से एक व्यक्ति को एक बेहतर व्यक्ति बनने में मदद करने से संबंधित है।
- हमें यह समझने की आवश्यकता है कि खुद को बेहतर लोगों में कैसे बदला जाए।

- इसका मतलब है कि हमें यह समझना होगा कि नैतिकता क्या है, नैतिक होने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए और वास्तव में नैतिक रूप से कैसे व्यवहार किया जाए।
- उन्होंने सोचा कि ज्ञान सदाचार है, और सदाचार से सुख मिलता है।
- यह सोचना समझ में आता है कि नैतिक लोग जानते हैं कि नैतिकता क्या है। यदि आप सही गलत जानते हैं, तो आप वह करने में सक्षम हो सकते हैं जो आप जानते हैं कि सही है।
- यह संदेह करना भी समझ में आता है कि सही और गलत के बारे में हमारा विश्वास हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है।
- सदाचार सदा सुख की ओर ले जाता है। अपराधी ऐसे अपराध करते हैं जो दूसरों को चोट पहुँचाते हैं। हालाँकि, दूसरों की मदद करना हमें खुश कर सकता है, इसलिए सही काम करना अपराध करने से ज्यादा संतोषजनक हो सकता है।
- प्रस्तावित "गुणों की एकता" - यदि आपके पास एक गुण है, तो आपके पास सब कुछ है। साहस के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है, ज्ञान के लिए संयम की आवश्यकता होती है (जैसे उचित खाने की आदतें), और संयम के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
- उन्होंने तर्क दिया कि सभी गुण एक प्रकार के ज्ञान हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि एक प्रकार के ज्ञान के लिए सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता होगी।

नैतिक बौद्धिकता

- **अच्छे जीवन के लिए कारण आवश्यक है**
  - सही काम करने से ही सच्चा सुख मिलता है।
  - जब आपकी सच्ची उपयोगिता की सेवा की जाती है (अपनी आत्मा को प्रवृत्त करके), तो आप सुख प्राप्त कर रहे हैं। आत्मा पर दीर्घकालिक प्रभाव के संदर्भ में ही खुशी स्पष्ट होती है।
  - मानव क्रिया का उद्देश्य प्रकृति में उद्देश्य के अनुसार अच्छाई की ओर होता है।
- **कोई भी बुराई या अज्ञानता में कार्य करने का चुनाव नहीं करता है**
  - कोई भी जानबूझकर खुद को नुकसान नहीं पहुँचाएगा।
  - जब हमें नुकसान होता है, हालाँकि हमने सोचा था कि हम अच्छे की तलाश कर रहे हैं, ऐसे मामले में अच्छा नहीं मिलता है, क्योंकि हमारे पास ज्ञान की कमी है कि अच्छे को कैसे प्राप्त किया जाए।
- **अन्यायपूर्ण जीवन पर न्यायपूर्ण जीवन के पक्ष में 3 तर्क**
  - धर्मी मनुष्य बुद्धिमान और भला होता है, और अन्यायी मनुष्य अज्ञानी और बुरा होता है
  - अन्याय आंतरिक वैमनस्य पैदा करता है जो प्रभावी कार्यों को रोकता है
  - सद्‌गुण किसी चीज के कार्य में उत्कृष्टता है और न्यायी व्यक्ति अन्यायी व्यक्ति की तुलना में अधिक सुखी जीवन जीता है, क्योंकि वह मानव आत्मा के विभिन्न कार्यों को अच्छी तरह से करता है।

प्लेटो

- 427/428 ईसा पूर्व में जन्मे और एथेंस के एक यूनानी राज्य के शहर में एक कुलीन परिवार से सम्बंधित थे।
- सुकरात का शिष्य जो ग्रीस के प्रमुख दार्शनिकों में से एक था।
- अपनी 'अकादमी' की स्थापना की, जो 'अकादेमोस' नामक एक प्रसिद्ध एथेनियन नायक के नाम से आती है। यहाँ प्लेटो ने राजनीतिक दर्शन पढ़ाया जिसमें राजनीति, नैतिकता, गणित और समाजशास्त्र शामिल थे।
- प्लेटो की तीन सबसे महत्वपूर्ण कृतियाँ 'द रिपब्लिक', 'द स्टेट्समैन' और 'द लॉज़' हैं। इन कृतियों के अलावा उन्होंने और भी कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी हैं।

4 कार्डिनल गुण

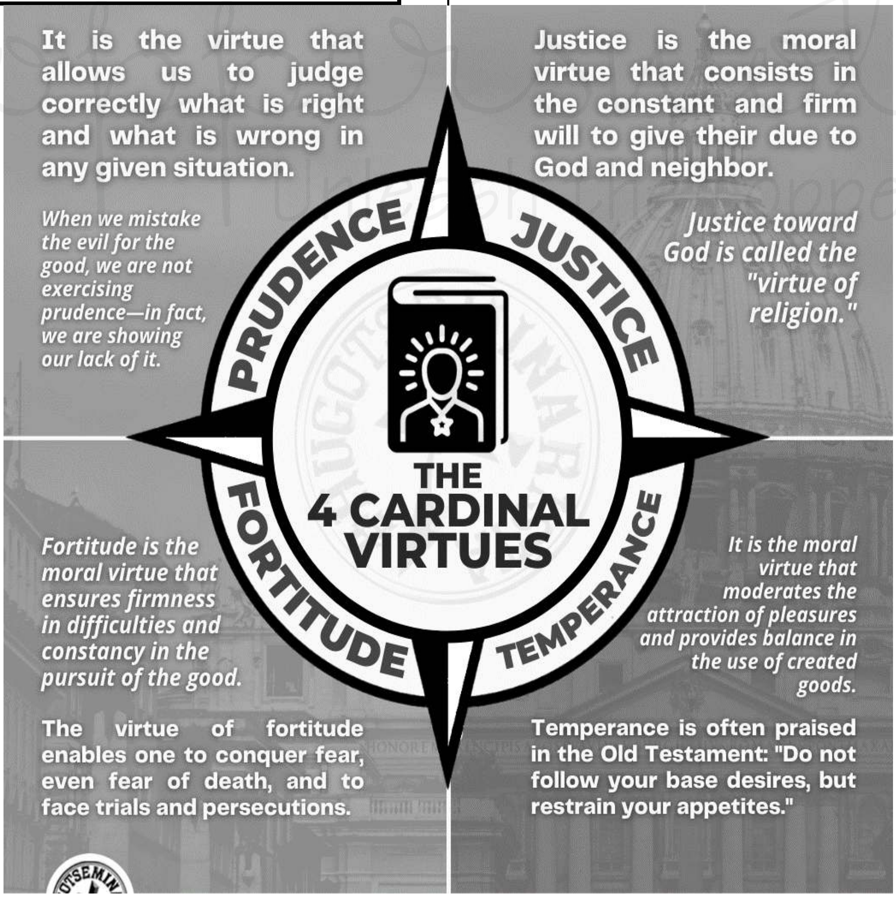

प्लेटो के विचार

- **आदर्श राज्य-**
  - शासक वर्ग, सैन्य वर्ग और आर्थिक वर्ग नामक 3 वर्गों से बना है।
- **आदर्श न्याय-**
  - न्याय एक ही इंसान और राज्य दोनों में रहता था।
  - प्रत्येक मनुष्य तीन गुणों से संपन्न है -
    - कारण - एक व्यक्ति के सिर में रहता है।
    - आत्मा - व्यक्ति के हृदय में निवास करती है।
    - भूख - व्यक्ति के पेट में रहती है।
- **शिक्षा**
  - बचपन से वयस्कता तक छात्रों की उम्र के अनुकूल विभिन्न चरणों के आधार पर।
  - शिक्षा के उच्च स्तर के रूप में उन्मूलन की युक्तियुक्त विधि मनुष्य द्वारा प्राप्त की जाती है।
  - उनकी आत्मा के तीन भागों अर्थात् कारण, आत्मा और भूख के अनुपात पर निर्भर करता है।
- **लोकतंत्र**
  - अपने काम 'द रिपब्लिक' में, उन्होंने व्यावहारिक रूप से लोकतंत्र की निंदा की।
  - इस विचार को विकसित किया कि सभी शासन करने के योग्य नहीं हैं और केवल दार्शनिकों को ही शासन करना चाहिए जिन्हें इस उद्देश्य के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया था।
- **बच्चे**
  - बच्चे राष्ट्रीय संपत्ति हैं और इस तरह राज्य की ओर से यह अनिवार्य था कि उन्हें उनके दृष्टिकोण के अनुसार लाया जाए।
- **गुण**
  - 3 प्रमुख भाग- बुद्धि, भावनाएँ और भूख।
  - तर्क करने और सीखने की बुद्धि,
  - भावनाओं को प्रेरित करने के लिए,
  - यह जानने के लिए भूख लगती है कि हमें कब किसी चीज़ (भोजन, पानी, आदि) की आवश्यकता होती है।

अरस्तु

- प्लेटो के छात्र
- एथेंस में प्लेटो की अकादमी में अध्ययन किया।
- राजनीतिक दर्शन के विश्वकोश के रूप में माना जाता है।
- प्लेटो की मृत्यु के बाद अरस्तु ने अपना शिक्षण कार्यक्रम शुरू किया।
- सिकंदर उनके शिष्यों में से एक है।
- प्लेटो के विपरीत जिन्होंने "आदर्श राज्य" का प्रस्ताव रखा, लेकिन अरस्तु ने "सर्वश्रेष्ठ व्यावहारिक राज्य" का प्रस्ताव रखा।
- ब्रह्मांड की टेलियोलॉजिकल व्याख्या दी।

अरस्तु के विचार

खुशी	• यह परम अच्छा है, क्योंकि अन्य सभी सामान मध्यवर्ती हैं। • खुशी का उच्चतम रूप बौद्धिक चिंतन का जीवन है। • सच्चा सुख भौतिक चीजों में नहीं है, बल्कि किसी के वास्तविक स्वरूप को समझने और अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त करने में है। • संक्षेप में, खुशी स्वयं पर, न कि बाहरी दुनिया पर निर्भर करती है। 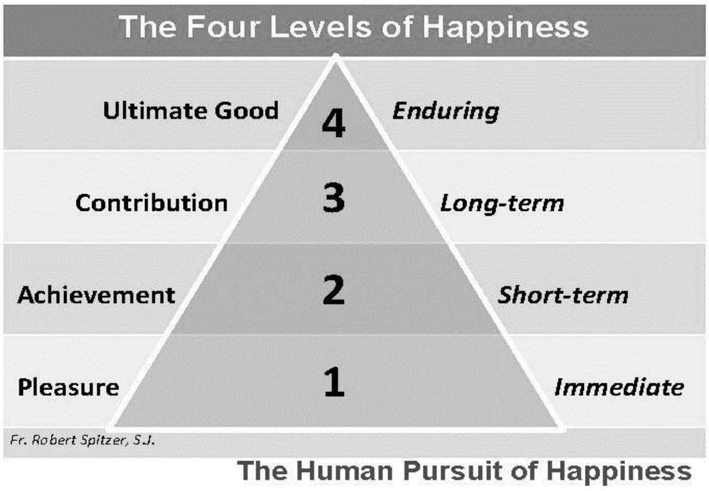

पुण्य नैतिकता	सद्गुण दो चरम सीमाओं के बीच एक सुनहरा माध्यम है। • दो चरम सीमाओं का मतलब। • गोल्डन मीन की पहचान किसी व्यक्ति के चरित्र या गुण पर आधारित होती है, जो आदतन क्रिया से जुड़ी होती है। • सदाचार नैतिकता की कुंजी यह है कि नैतिक क्रिया व्यक्ति पर आधारित होती है। ○ वाइस ऑफ मिनिमल - यह विश्वास रखना कि भगवान सब कुछ संभाल लेंगे। ○ अति का दोष - स्वभाव से लालची हो। ○ गुण कैसे प्राप्त करें- (i) आदत (ii) खुशी (iii) बुद्धि, ज्ञान, विवेक आदि जैसे बौद्धिक गुण (iv) नैतिक गुण जैसे साहस, संयम, स्वतंत्रता आदि
राज्य और नागरिक	• राज्य का प्रमुख कार्य अच्छे जीवन को बढ़ावा देना और लोगों के मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियों का निर्माण करना है। • राज्य को भी इस तरह से कार्य करना चाहिए कि व्यक्तियों की अच्छी आदतें अच्छे कार्यों में परिवर्तित हो जाएँ और अच्छे, सुखी और सम्मानजनक जीवन को बढ़ावा दें।
परिवार	• एक प्राकृतिक संस्था और वास्तव में यह राज्य से पहले अस्तित्व में थी। • यह स्वाभाविक है क्योंकि व्यक्ति अपने जन्म से ही सदस्य बन जाते हैं। यह नैतिक जीवन का प्रारंभिक बिंदु और राज्य का केंद्र बिंदु है।
गुलामी	• दास एक स्वामी की चेतन संपत्ति में से पहला है अर्थात् दास उस घर की सभी जीवित संपत्ति में प्रथम है जिसका स्वमी वह है। • दास उत्पादन का नहीं, कर्म का साधन है, क्योंकि जैसे ही वह उत्पादक कार्य करना शुरू करता है, वह दास के रूप में अपना चरित्र खो देता है और गुणी हो जाता है।

वर्धमान महावीर

- **आत्मा और कर्म में विश्वास**
  - कहा कि आत्मा कर्म के कारण बंधन की स्थिति में है।
  - विश्वास था कि कर्मशक्ति के विघटन से ही आत्मा की मुक्ति हो सकती है।
  - कर्मों के क्षय से आत्मा के आंतरिक मूल्य को उजागर किया जा सकता है और आत्मा पूर्ण प्रकाश में चमकती है।
  - जब आत्मा अनंत महानता प्राप्त कर लेती है तो वह अनंत ज्ञान, शक्ति और आनंद के साथ परमात्मा, शुद्ध आत्मा बन जाती है।
- **निर्वाण**
  - महावीर के अनुसार जीवन का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है।
  - बुरे कर्मों से बचने, सभी प्रकार के नए कर्मों को रोकने और मौजूदा कर्मों को नष्ट करने पर जोर दिया।
  - निर्वाण 5 व्रतों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है - गैर-चोट (अहिंसा), सच बोलना (सत्य), गैर-चोरी (अस्थेय), गैर-व्यभिचार (ब्रह्मचर्य) और गैर-कब्जे (अपरिग्रह)।
  - सही आचरण, सही विश्वास और सही ज्ञान के सिद्धांतों पर भी जोर दिया।
- **ईश्वर में अविश्वास**
  - वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता था और न ही यह मानता था कि उसने दुनिया की रचना की है या उस पर कोई व्यक्तिगत नियंत्रण नहीं रखता है।
  - दुनिया कभी खत्म नहीं होती यह बस अपना रूप बदलती है।
  - इस सिद्धांत पर सांख्य दर्शन का प्रभाव।

- तपस्या और आत्मग्लानि का जीवन व्यतीत करने से मनुष्य अपने दुखों से छुटकारा पा सकता है।

- **वेदों की अस्वीकृति**
  - वेदों के सिद्धांत को खारिज कर दिया और ब्राह्मणों के यज्ञ अनुष्ठानों को कोई महत्व नहीं दिया।
- **अहिंसा**
  - सभी प्राणियों, जानवरों, पौधों, पत्थरों, चट्टानों आदि में जीवन है और किसी को भी वाणी, कर्म या कर्म से दूसरे को कोई नुकसान नहीं करना चाहिए।
  - यद्यपि यह सिद्धांत पूरी तरह से नया नहीं था, इसका श्रेय जैनियों को जाता है कि उन्होंने इसे लोकप्रिय बनाया और इस तरह विभिन्न प्रकार के बलिदानों की प्रथा को समाप्त कर दिया।
- **महिलाओं को आजादी**
  - महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्षधर थे और मानते थे कि उन्हें भी निर्वाण प्राप्त करने का अधिकार है।
  - अपने पूर्ववर्ती पार्श्वनाथ के उदाहरण का अनुसरण किया।
  - जैन संघ में महिलाओं को अनुमति दी गई और कई महिलाएँ भिक्षुणी और श्राविक बन गईं।

जैन धर्म की शिक्षा

1. पंच महाव्रत (पाँच सिद्धांत)

अहिंसा	• जैन धर्म का कार्डिनल सिद्धांत। • सर्वोच्च धर्म (अहिंसा परमो धर्म)। • जैन धर्म के अनुसार, सभी जीवित प्राणी, उनके आकार, आकार या विभिन्न आध्यात्मिक विकास के बावजूद समान हैं। • किसी भी जीवित प्राणी को जानवरों, कीड़ों और पौधों सहित किसी अन्य जीवित प्राणी को नुकसान पहुँचाने, चोट पहुँचाने या मारने का अधिकार नहीं है। • प्रत्येक जीवित प्राणी को अस्तित्व का अधिकार है और प्रत्येक जीवित प्राणी के साथ पूर्ण सद्भाव और शांति से रहना आवश्यक है। • नकारात्मक गुण नहीं। • सार्वभौमिक प्रेम और करुणा के सकारात्मक गुण पर आधारित। • जो इस आदर्श से प्रेरित होता है, वह दूसरों की पीड़ा के प्रति उदासीन नहीं हो सकता।
चोरी न करना (आचार्य या अस्तेय)	• दूसरे की संपत्ति उसकी सहमति के बिना या अन्यायपूर्ण या अनैतिक तरीकों से लेना। • ऐसी कोई भी वस्तु नहीं लेनी चाहिए जो उसकी न हो। • किसी को ऐसी चीज़ लेने का अधिकार नहीं है, जो झूठ बोल रही हो, लावारिस हो। • इस व्रत का कड़ाई से पालन करना चाहिए और किसी फालतू वस्तु को भी नहीं छूना चाहिए जो उसकी नहीं है। • भिक्षा, सहायता या सहायता स्वीकार करते समय जितना कम हो उतना अधिक नहीं लेना चाहिए। • अपनी आवश्यकता से अधिक लेना भी जैन धर्म में चोरी माना गया है।
सत्य	• क्रोध, लोभ, भय और मजाक - असत्य के प्रजनन का आधार। • जो लोभ, भय, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार और तुच्छता पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, वही सत्य बोल सकते हैं। • असत्य से न केवल बचना चाहिए, बल्कि हमेशा सत्य बोलना चाहिए, जो हितकर और सुखद हो। • यदि सत्य किसी भी जीव को पीड़ा, चोट, क्रोध या मृत्यु देता है तो उसे चुप रहना चाहिए। • सत्य को वाणी, मन और कर्म में देखना है। • किसी को असत्य नहीं बोलना चाहिए, दूसरों को ऐसा करने के लिए नहीं कहना चाहिए, या ऐसी गतिविधियों को स्वीकार नहीं करना चाहिए।
गैर-कब्जा (अपरिग्रह)	• एक व्यक्ति के पास जितना अधिक सांसारिक धन होता है, उतना ही अधिक पाप करने की संभावना अधिक होती है, और वह लंबे समय में दुखी हो सकता है। • सांसारिक धन आसक्ति उत्पन्न करता है, जिसके परिणामस्वरुप लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ, अहंकार, घृणा, हिंसा आदि निरंतर उत्पन्न होते रहेंगे। • जो आध्यात्मिक मुक्ति चाहता है उसे सभी आसक्तियों से सभी पाँचों इंद्रियों

	की सुखद वस्तुओं को वापस लेना चाहिए। • भिक्षु, इस व्रत का पालन सभी चीजों से मोह त्याग कर करते हैं। जैसे - भौतिक चीजें- धन, संपत्ति, अनाज, घर, किताबें, कपड़े, आदि। • संबंध- पिता, माता, पति या पत्नी, बच्चे, मित्र, शत्रु, अन्य साधु, शिष्य, आदि। • पाँच इंद्रियों का आनंद- स्पर्श, स्वाद, गंध, दृष्टि और श्रवण • भावनाएँ- किसी भी वस्तु के प्रति सुख और दुख की भावना ○ संगति- संगीत और शोर, अच्छी और बुरी गंध, स्पर्श के लिए नरम और कठोर वस्तुएँ, सुंदर और गंदी जगहें, आदि।
ब्रह्मचर्य (ब्रह्मचर्य)	• ब्रह्मचर्य - कामुक सुख से पूर्ण संयम और सभी पाँचों sइंद्रियों का आनंद। • कामुकता को नियंत्रित करने के व्रत का सूक्ष्म रूप में पालन करना बहुत कठिन है। • कोई शारीरिक भोग से परहेज कर सकता है, लेकिन फिर भी कामुकता के सुखों के बारे में सोच सकता है, जो जैन धर्म में निषिद्ध है। • भिक्षुओं को इस व्रत का कड़ाई से और पूरी तरह से पालन करना आवश्यक है। • गृहस्थों को अपने स्वयं के पति या पत्नी के अलावा कोई शारीरिक संबंध नहीं होना चाहिए- वह भी सीमित प्रकृति का। • प्रथम चार उपदेश - **23**वें तीर्थंकर, पार्श्वनाथ। • अंतिम - महावीर।

2. त्रिरत्न (तीन रत्न)

(i) अनेकांतवाद

- अर्थ "गैर-निरपेक्षता।
- सापेक्षवाद और बहुलवाद की स्वीकृति को प्रोत्साहित करता है।
- सत्य और वास्तविकता को अलग-अलग दृष्टिकोण से अलग-अलग माना जाता है, और कोई एक दृष्टिकोण पूर्ण सत्य नहीं है।
- वस्तुओं में अस्तित्व और गुण के अनंत तरीके होते हैं इसलिए उन्हें सीमित मानवीय धारणा द्वारा सभी पहलुओं और अभिव्यक्तियों में पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है।
- केवल सर्वज्ञानी प्राणी ही सभी पहलुओं और अभिव्यक्तियों में वस्तुओं को समझ सकते हैं, अन्य केवल आंशिक ज्ञान के लिए सक्षम हैं।

(ii) स्यादवाद (सशर्त भविष्यवाणी का सिद्धांत)

- सभी निर्णय सशर्त होते हैं, केवल कुछ शर्तों, परिस्थितियों या इंद्रियों में अच्छे होते हैं, जिसे शब्द सियात (संस्कृत- "हो सकता है") द्वारा व्यक्त किया जाता है।
- किसी वस्तु को देखने के तरीके (जिसे नया कहा जाता है) संख्या में अनंत हैं।
- जैनियों का मानना है कि केवल एक नय दृष्टिकोण से अनुभव की व्याख्या करना, दूसरों के बहिष्कार के लिए, एक हाथी को महसूस करने वाले सात अंधे पुरुषों की तुलना में एक त्रुटि है, जिनमें से प्रत्येक ने निष्कर्ष निकाला कि वह जिस हिस्से को पकड़ रहा था वह हाथी का प्रतिनिधित्व करता था। सच्चा रूप।
- अनेकान्तवाद या "वास्तविकता की बहुपक्षीयता" - सभी कथनों को सत्य या गलत या दोनों के रूप में सत्य और असत्य नहीं माना जा सकता है और इस प्रकार, दृष्टिकोण के आधार पर अवर्णनीय माना जा सकता है।
- इन संभावनाओं के संयोजन को सात तार्किक विकल्पों में बताया जा सकता है जिन्हें सप्तभागी कहा जाता है।

(iii) क्रियाएँ- पाप (हिंसा, चोरी, झूठ, सहवास, क्रोध, जमाखोरी, अभिमान, माया, काम, लोभ, झगड़ा, द्वेष, झूठी शिकायत, दूसरों की निंदा करना, नियंत्रण न करना, पीठ थपथपाना, झूठी सोच और दोहरा नैतिक मानदंड) .

(iv) ब्रह्मांड की शाश्वतता में विश्वास- छह गैर-विनाशकारी तत्वों से बना ब्रह्मांड- जीव (आत्मा), अजिव (भौतिक पदार्थ), धर्म, अधर्म, काल और आकाश।

(v) ज्ञान के तीन स्रोत

- प्रत्यक्ष प्रमाण (**5** इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त धारणा)

- अनुमान (अनुमान, जिसके द्वारा हम सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं)
- शब्द प्रमाण (एक विशेषज्ञ का कथन- इस मामले में, तीर्थंकर)

(vi) अंतिम लक्ष्य- निर्वाण की प्राप्ति- जैन धर्म के त्रिरत्न का अभ्यास करके प्राप्त किया जा सकता है।

(vii) मनुष्य का भाग्य कर्म और उसके फल से बनता है।

(viii) जैन धर्म में निर्वाण
- कर्म के बंधन से अंतिम मुक्ति का संकेत देता है।
- प्रबुद्ध मनुष्य के शेष 'घटिया कर्मों' का विनाश।
- उसके सांसारिक अस्तित्व की समाप्ति के बाद।
- प्रबुद्ध मनुष्य की आत्मा की मुक्ति के रूप में वर्णित है।
- 'मोक्ष' की ओर ले जाता है और मानव अस्तित्व 'सिद्ध' की स्थिति में पहुँचजाता है।

गौतम बुद्ध

1. पंचशीला (पाँच उपदेश या सामाजिक आचार संहिता)
- हिंसा न करें
- नशीले पदार्थों का सेवन न करें
- झूठ मत बोलो
- भ्रष्टाचार में लिप्त न हों

2. चार आर्य सत्य
- चार आर्य सत्य, पाली छतरी-अरिया-सक्कनी, संस्कृत चटवारी-आर्य-सत्यनी, बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में से एक, बुद्ध द्वारा अपने पहले उपदेश में धर्म के संस्थापक बुद्ध द्वारा निर्धारित किया गया था, जो उन्होंने अपने ज्ञान के बाद दिया था।
- बौद्ध धर्म के सभी स्कूलों द्वारा स्वीकार किया गया और व्यापक टिप्पणी का विषय रहा है।

3. अष्टांगिका मार्ग (आठ गुना पथ)
- नेक मार्ग में निम्नलिखित आठ अच्छी चीजों की प्राप्ति शामिल है-

सम्मादिथि या सम्यग्दृष्टि	• नैतिक सुधार के लिए पहला कदम सही विचारों या सत्य के ज्ञान का अधिग्रहण होना चाहिए। • 4 आर्य सत्यों के बारे में सही ज्ञान के रूप में परिभाषित। • नैतिक सुधार में मदद करता है, और निर्वाण की ओर ले जाता है।
सही संकल्प/दृढ़ संकल्प	• सत्य का ज्ञान तब तक बेकार होगा, जब तक कि कोई उनके प्रकाश में जीवन को सुधारने का संकल्प नहीं करता। • नैतिक आकांक्षी को सांसारिकता (संसार से सभी लगाव) को त्यागने के लिए कहा जाता है।
संवाद या सम्यग्वाक	• झूट, निन्दा, निर्दयी वचनों और फालतू की बातों से दूर रहें।
सम्मकमंता / सम्यक्कर्मंत	• पंच-शिला, हत्या, चोरी, कामुकता, झूठ और नशा से दूर रहने के लिए 5 व्रत शामिल हैं।
सम्माजीव या सम्यग्जीव	• व्यक्ति को ईमानदारी से अपनी आजीविका अर्जित करनी चाहिए। • अर्जित करने के लिए वर्जित साधनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए और अच्छे निश्चय के साथ संगति में काम करना चाहिए।
सम्मवायम या सम्यग्व्ययम	• कोई व्यक्ति तब तक निरंतर प्रगति नहीं कर सकता जब तक कि वह पुराने बुरे विचारों को जड़ से उखाड़ फेंकने और बुरे विचारों को नए सिरे से उत्पन्न होने से रोकने के लिए निरंतर प्रयास नहीं करता है। • मन को अच्छे विचारों से भरने का निरंतर प्रयास करना चाहिए और ऐसे विचारों को मन में बनाए रखना चाहिए।
संमासती या सम्यक्स्मृति	• संवेदनाओं या भावनाओं, धारणा, विचारों, विचारों और मन की गतिविधियों के संबंध में लगन से सावधान रहें। • मन में संतुलन, लाता है।
सम्मासमाधि / सम्यक् समाधि	• सही प्रयास + सही दिमागीपन = सही एकाग्रता।

	• ध्यान की दुनिया में एकाग्रता स्थापित करने के लिए साँसलेने की विधि का ध्यान। • एकाग्र मन की ओर ले जाता है और आत्मज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।
बुद्ध ने एक मध्यम मार्ग/मध्यम मार्ग निर्धारित किया और लोगों से सुख या दुख के किसी भी चरम से बचने के लिए कहा।	

1. एक व्यक्ति, केवल जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त होने पर ही निर्वाण प्राप्त कर सकता है।
2. त्रिरत्न (बौद्ध धर्म के तीन रत्न)
    - जागृत मन की 3 अभिव्यक्तियाँ- बुद्ध, धर्म और संघ।

बौद्ध पथ का आवश्यक तत्व और तीन रत्न कहलाते हैं।

आचार्य शंकर

- उनका जन्म कलाड़ी गाँव (केरल) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और वे गोविंदपाद के शिष्य थे।
- उनकी बौद्धिक श्रेष्ठता के लिए, उन्हें भारतीय विचारकों में सबसे महान दार्शनिक के रूप में जाना जाता है।

उनके दर्शन के तत्व

- अद्वैत वेदाँत - ब्रह्म ही एकमात्र वास्तविकता है और दुनिया माया की रचना है।
- ब्रह्म - ब्रह्म (शुद्ध चेतना) सभी गुणों और सभी श्रेणियों की बुद्धि से रहित है। यह बिल्कुल अनिश्चित, अद्वैत और वाणी और मन से परे है। जिस क्षण हम इस ब्रह्म को बुद्धि की श्रेणियों में लाने का प्रयास करते हैं, यह बिना शर्त चेतना नहीं रहती, बल्कि बद्ध हो जाती है। माया द्वारा प्रतिबिम्बित या बद्ध, इस ब्रह्म को ईश्वर कहा जाता है।
- ईश्वर-ईश्वर ही अस्तित्व, चेतना, आनंद है। वह पूर्ण व्यक्तित्व, माया के भगवान और इस ब्रह्मांड के निर्माता, पालनकर्ता और संहारक हैं। वे भक्ति के पात्र और नैतिक जीवन के प्रेरक हैं।
- व्यक्तिगत स्व - स्वयं ब्रह्म से अलग नहीं है। अज्ञानता के कारण व्यक्ति को द्वैत की झूठी धारणा होती है जो स्वयं की वास्तविक प्रकृति की प्राप्ति में एक बड़ी बाधा है। जब कोई श्रुति द्वारा जागृत होता है, तो उसे पता चलता है कि वह शरीर, इंद्रियाँ या मन नहीं है, बल्कि अद्वैत सार्वभौमिक स्व है।
- बंधन - मनुष्य की बंधन और पीड़ा की स्थिति अज्ञानता के कारण है। अज्ञान के कारण, आत्मा भूल से अपने को स्थूल और सूक्ष्म शरीर से जोड़ लेती है। इस स्थिति में, यह भूल जाता है कि यह वास्तव में ब्रह्म है, और अपने आप को एक सीमित शरीर और मन के साथ पहचानता है जो स्वयं को ('अहंकार' या 'मैं') के रूप में अवधारणा की ओर ले जाता है।
- मुक्ति - मुक्ति ब्रह्म के साथ एकता की स्थिति है जो और कुछ नहीं, बल्कि केवल अपने स्वयं के सत्य की प्राप्ति है। यह वास्तव में दुख की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि सकारात्मक आनंद की स्थिति है। शंकर ने मुक्ति की तुलना गले पर हार की खोज से की, जो वहाँ अपने अस्तित्व को भूल गया और इधर-उधर खोजा।
- तत्त्वम् असि - आत्मा और ईश्वर (अयोग्य अद्वैतवाद) के बीच एक अयोग्य पहचान है। वस्तुओं और वस्तुओं, विषय और वस्तु, स्वयं और ईश्वर के बीच सभी भेद माया की मायावी रचना हैं।
- ज्ञान - ज्ञानयोग (ज्ञान प्राप्ति) से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कर्म और उपासना केवल उत्प्रेरक हैं जो हमें वास्तविकता को जानने और हमें तैयार करने का आग्रह करते हैं
- उस ज्ञान के लिए हमारे मन को शुद्ध करके लेकिन, अंततः यह ज्ञान ही है जो हमें मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

निष्कर्ष

- शंकर के अनुसार, अज्ञान बंधन का मूल कारण है।
- शंकर कहते हैं कि जिस प्रकार प्रकाश अंधकार का विरोधी है और प्रकाश ही अंधकार को दूर कर सकता है, उसी प्रकार केवल ज्ञान ही अज्ञान को नष्ट कर सकता है। शंकर के अनुसार वेदाँत का अध्ययन मनुष्य को अज्ञानता को पूरी तरह से नष्ट करने में मदद करता है।
- उनका आगे तर्क है, गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है, इस प्रकार जो मुक्ति की इच्छा रखता है, उसे पहले एक ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए जिसने ब्रह्म को महसूस किया हो।

चार्वाक

दर्शन- लोकायत
स्रोत- बृहस्पति
सूत्र प्रकृति- नास्तिक हिंदू परंपरा
विशेषताएँ

1. यह लोका पर आधारित है जिसका अर्थ है वास्तविक भौतिक संसार और आयत जो राय के लिए खड़ा है

2. यह भौतिकवाद का समर्थन करता है, क्योंकि भौतिकवादी अनुभव वास्तविक होते हैं और इंद्रियों द्वारा महसूस किए जाते हैं। मनुष्य का कामुक सुख केवल सांसारिक चीजों की धारणा पर निर्भर करता है।
3. चार्वाक दर्शन हिंदू धर्म के नास्तिक विचारधारा से संबंधित है और यह मोक्ष के विचार को खारिज करता है। चार्वाक ने किसी भी अलौकिक अस्तित्व पर विश्वास नहीं किया और स्वीकार नहीं किया।
4. ज्ञान के संदर्भ में, चार्वाक अनुमान आधारित ज्ञान को खारिज करते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि चूँकि ज्ञान अनुमानों पर आधारित है जो स्वाभाविक रूप से संदेह का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरण के लिए, अनुमान आधारित ज्ञान कहता है कि यदि धुआँ है तो आग अवश्य होगी। चार्वाक ने धुएँ पर संदेह जताया और तर्क दिया कि ऐसे कई तरीके हैं जिनसे धुआँ उठ सकता है और फैल सकता है क्योंकि तापमान में अंतर के कारण सर्दियों में मुँह से धुआँ निकलता है। इसलिए उन्होंने संशयवाद का समर्थन किया।
5. ज्ञान के बारे में संदेह चार्वाक दर्शन का अनिवार्य हिस्सा है।
6. चार्वाक भी बौद्ध धर्म और जैन धर्म की तरह वैदिक विरोधी थे, लेकिन बुद्ध और महावीर ने भौतिकवाद के विचार पर चार्वाक को खारिज कर दिया।
7. पश्चिमी दर्शन में, लोकायत दर्शन की तरह एपिकुरियन-इस्म काफी समान है। दोनों दर्शन दर्द पर सुख को बढ़ावा देते हैं। चार्वाक ने तर्क दिया कि किसी को सुख का विरोध नहीं करना चाहिए, बल्कि आनंद के पीछे रहना चाहिए और जितना हो सके दर्द से बचने का प्रयास करना चाहिए। चार्वाक अभी भी अत्यधिक आनंद के बारे में सतर्क थे क्योंकि इससे समस्याग्रस्त मानसिक स्थिति पैदा होगी।
8. कामुक सुख को प्राथमिकता दी जानी चाहिए क्योंकि इन्द्रियों का उपयोग यहाँ किया जाता है अस्वीकार करने के लिए नहीं।

धारणा बनाम अनुमान

- चार्वाक के अनुसार धारणा ही ज्ञान है। इसमें दो तह होते हैं यानी भीतरी और बाहरी।
- जबकि आंतरिक धारणा मन और उसके संज्ञानात्मक कार्य के बारे में है,
- बाहरी अनुभूति पाँच इंद्रियों, सांसारिक चीजों और प्रकृति का अनुभव है।
- चार्वाक के लिए, अनुमान केवल आधारित अवलोकन हैं और वे कुछ हद तक उपयोगी हैं लेकिन वे त्रुटि के लिए प्रवण हैं। चार्वाक कहते हैं कि निष्कर्ष तभी पूर्ण और वैध ज्ञान का साधन हो सकता है जब कोई सभी अवलोकनों, सभी परिसरों और प्रत्येक स्थिति को जानता हो।
- आखिर चार्वाक ने किस बात को नकारा ?
  1. बाद का जीवन
  2. संसार
  3. कर्म का दर्शन
  4. धार्मिक संस्कार और परंपरा
  5. पुनर्जन्म
  6. बौद्ध और जैन धर्म व्यायाम संयम पर ध्यान दें

आलोचना और मूल्यांकन

- चार्वाक का भौतिकवाद का प्रचार उपभोक्तावाद से जुड़ा हुआ है।
- यह लंबे समय तक संघर्ष और पर्यावरण में असंतुलन का कारण बनता है।
- अध्यात्म मानसिक समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकता है जबकि चार्वाक केवल कामुक आनंद की बात करता है।
- चार्वाक का संशयवाद अच्छा है क्योंकि यह जिज्ञासु मन को विकसित करने में मदद करता है।
- सभी वैज्ञानिक खोजों में संदेह की बात है। कोई भी ज्ञान स्थायी और मान्य नहीं है जब तक कि हमारे पास सभी अवलोकन न हों, चार्वाक के दर्शन का मूल विचार मानव सुख के नए साधनों का पता लगाना और दर्द से बचना था। बड़े पैमाने पर समाज कल्याण की उम्मीद करते हैं और भौतिक सुख भी खुशी का एक अनिवार्य हिस्सा है।
- चार्वाक पूछने, प्रश्न करने और आनंद की इच्छा के माध्यम से सांसारिक समस्याओं के लिए सांसारिक समाधान खोजने में मदद करता है।

भर्तृहरि

- योगी भर्तृहरि संस्कृत साहित्य में एक नीतिकार के रूप में जाने जाते है।
- भर्तृहरि संस्कृत के एक महान कवि और नीतिकार थे।
- भर्तृहरि का जन्म उज्जैन में हुआ था. उनके पिता का नाम राजा गंधर्वसेन था
- भर्तृहरि, विक्रमादित्य के बड़े भाई थे
- एक घटना के बाद, भर्तृहरि गुरु गोरखनाथ के शिष्य बन गए और योग साधना करके योगी बन गए

भर्तृहरि की प्रमुख रचनाएँ

- संस्कृत साहित्य में योगी भर्तृहरि द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ

- नीति शतक
- श्रृंगार शतक
- वैराग्य शतक

समाज सुधारक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका

- योगी भर्तृहरि ने समाज में उच्चतम और न्यायपूर्ण स्तर की जीवनशैली की ओर प्रेरित किया है।
- उन्होंने भेदभाव, असमानता, और अन्य सामाजिक द्वंद्वों के खिलाफ उठने की प्रेरणा दी है।
- उन्होंने न्यायप्रिय और समाज में समरस न्याय प्रणाली की स्थापना के लिए काम किया है।
- योगी भर्तृहरि की रचनाएं धर्म, नैतिकता, और जीवन के सिद्धांतों पर आधारित हैं।
- उनकी कविताएं समाज को सद्‌गुणों, नैतिकता, और धार्मिक दृष्टिकोण की ओर प्रवृत्ति करने में मदद करती हैं।
- योगी भर्तृहरि ने अपनी रचनाओं में तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों जैसे कि जातिवाद, लिंगभेद, अंधविश्वास, और भ्रष्टाचार पर कड़ी टिप्पणी की।
- उन्होंने ने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया और महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान करने का समर्थन किया।
- उन्होंने अपनी रचनाओं में आध्यात्मिकता पर बल दिया और लोगों को भौतिकवादी जीवन से दूर रहकर आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा दी।
- भर्तृहरि की रचनाओं का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनकी रचनाओं ने लोगों को सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया।
- उन्होंने नैतिक मूल्यों और सामाजिक समानता के महत्व को लोगों के बीच स्थापित किया।

गुरु नानक

- 16वीं शताब्दी में अंतर-धार्मिक संवाद शुरू किया और अपने समय के अधिकांश धार्मिक संप्रदायों के साथ बातचीत की।
- उनकी रचनाओं को दसवें गुरु गुरु गोबिंद सिंह (1666-1708) द्वारा किए गए जोड़ के बाद पाँचवें सिख गुरु अर्जन देव (1563-1606) के / एक गुरु ग्रंथ साहिब द्वारा संकलित आदि ग्रंथ में शामिल किया गया था।
- गुरु नानक की शिक्षाएँ- सभी के लिए शांति और सद्भाव।
- समानता के महान समर्थक जिनका उद्देश्य एक जातिविहीन समाज का निर्माण करना था जिसमें कोई पदानुक्रम न हो।
- जाति, पंथ, धर्म और भाषा के आधार पर मतभेद और कई पहचानों को अप्रासंगिक माना जाता है।
- समानता का उनका विचार निम्नलिखित नवीन सामाजिक संस्थाओं द्वारा निकाला जा सकता है, जैसा कि उनके द्वारा दिया गया है-
  - लंगर- सामूहिक रूप से खाना बनाना और खाना बाँटना।
  - पंगत- उच्च और निम्न जाति के भेद के बिना भोजन करना।
  - संगत- सामूहिक निर्णय लेना।
- उन्होंने कहा, "जाति निराधार है, जन्म का भेद व्यर्थ है। भगवान सभी प्राणियों को आश्रय देते हैं।"
- महिलाओं का उल्लेख करते हुए, गुरु नानक कहते हैं- “जब वे पुरुषों को जन्म देती हैं तो वे कैसे हीन हो सकती हैं? भगवान की कृपा में महिलाओं के साथ-साथ पुरुष भी हिस्सा लेते हैं और उनके कार्यों के लिए समान रूप से जिम्मेदार हैं।"
- एक साथ रहने और एक साथ मिलकर काम करने की भावना विचार का एक सुसंगत धागा है जो गुरु नानक भजनों के माध्यम से चलता है।
- उन्होंने सिख धर्म के तीन स्तंभों नाम जपना, किरात करनी और वंद चकना की स्थापना की।
- वह अपने दो साथियों भाई बाला, एक हिंदू और भाई मर्दाना, एक मुस्लिम के साथ, कई संतों और सूफियों के साथ संवाद करने के लिए, कुछ आध्यात्मिक शक्तियों का दावा करने वाले कुछ चार्लटनों के साथ, दूर-दूर तक (उड़ासियन कहा जाता है) जानबूझकर लंबी यात्रा पर गए और कुछ सामाजिक अनुसरण था।

कबीर

- कबीर का मानना था कि ईश्वर एक है।
- उन्होंने मूर्ति पूजा की वकालत नहीं की।
- उनके अनुसार सच्चा समर्पण स्वयं को महसूस करने का तरीका है और इसलिए सर्वोच्च शक्ति जिसे ईश्वर कहा जाता है।
- कबीर ने तपस्या का समर्थन नहीं किया और उनका मानना था कि कोई भी भौतिकवादी दुनिया और उसके दायित्वों को छोड़े बिना भगवान को पा सकता है।
- कबीर ने सभी धर्मों को एक ही प्रकाश में देखा और धर्मों को एक ही ईश्वर तक पहुँचने के लिए अलग-अलग साधन माना।
- उन्होंने धर्म और जाति के आधार पर समाज को बाँटने वालों की कड़ी आलोचना की।
- कबीर इस्लाम के साथ हिंदू धर्म को समेटने वाले पहले संत थे।

Toppersnotes Unleash the topper in you

- कबीर ने रूढ़िवादी प्रथाओं और अर्थहीन कर्मकांडों को छानते हुए सभी धर्मों से अच्छी चीजें लीं।
- उसका परमेश्वर एक व्यक्तिगत परमेश्वर था, जिसकी वह अपनी इच्छानुसार पूजा कर सकता है।
- ये विचार मूल रूप से भक्ति पंथ के आधार थे, जिसके बाद मीरा बाई, रैदास, बिहारी आदि थे।
- वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता।
- उनके दोहे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने समय की सीमाओं को लांघते हुए वे उस समय थे जब उन्होंने उन्हें लिखा था।
- धर्म के प्रति उनका धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण सदाबहार है।

आज के इस संकट की घड़ी में उनके विचारों पर चलना उचित है -

- कबीर की शिक्षाएँ वर्तमान समय की सामाजिक और धार्मिक आवश्यकताओं के पूर्ण सामंजस्य में हैं।
- उन्होंने एक एकीकृत भारतीय समाज की अवधारणा के साथ खुद को पूरी तरह से पहचाना और लाखों लोगों का दिल जीता। यह इस समय समय की माँग है।
- सोशल मीडिया जैसी तकनीक लोगों को एकजुट करने वाली है। लेकिन हम वास्तव में एक ही तकनीक का उपयोग एक विभाजनकारी संस्कृति बनाने के लिए कर रहे हैं और हम उन लोगों से नफरत करते रहे हैं जिन्हें हम नहीं जानते हैं और कभी नहीं मिले हैं। कबीर ने हमेशा प्रत्यक्ष अनुभव की वकालत की है और यह वर्तमान परिस्थितियों में काम आएगा।
- कई आख्यानों की स्वीकार्यता और असहमति की गुंजाइश आज गायब है। कबीर की स्वयं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने की शिक्षा और उन विचारों को समायोजित करने की आदत की अब बहुत आवश्यकता है।
- जातिविहीन समाज का उनका विचार जो तर्कसंगतता पर आधारित है, आधुनिक समाज में व्याप्त जातिवाद और अंधविश्वासों का उत्तर है।
- सामाजिक समानता के प्रति कबीर की स्पष्ट दृष्टि और दृष्टिकोण था। उन्होंने समाज में भेदभाव को समाप्त करने के लिए जागरूकता पैदा की। समाज को अभी भी उस जागरूकता की जरूरत है।
- वर्तमान सांप्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत दुनिया में, कबीर की एकता का विचार लगभग भविष्यसूचक लगता है।
- उन्होंने उस समय की संरचनाओं और प्रणालियों पर सवाल उठाया और हमेशा समाज में अधिकार का दावा करने वाले लोगों से सवाल किया। यथास्थिति की ओर रुख कर रहे समाज में यह स्वभाव पहले से कहीं अधिक आवश्यक है।
- संत कबीर अपनी मृत्यु के 500 साल बाद भी दुनिया भर में लोगों को प्रेरित करते रहते हैं। लोग आज भी उनके दोहे को आज के संदर्भ में प्रासंगिक पाते हैं जो धीरे-धीरे उपभोक्तावाद, शहरीकरण और वैश्वीकरण की चपेट में आ रहा है।
- इसलिए, कबीर के दोहे समय की कसौटी पर खरे उतरने की क्षमता के साथ मूल दर्शन में निहित हैं। इससे संत कबीर की शिक्षा अमर हो जाती है।

तुलसीदास

- गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के महान भक्त कवि थे।
- तुलसीदास जी ने प्रसिद्ध ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस की रचना की, यह ग्रन्थ ब्रजावधी में रचित में रचित है
- रामचरितमानस को आमतौर पर तुलसीदास जी का अमूर्त भक्ति-काव्य माना जाता है, जिसमें श्रीराम की कथा और भगवद्भक्ति के सिद्धांतों को सुंदरता से व्यक्त किया गया है।
- इन्हें आदिकाव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी माना जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ

- गीतावली, कृष्ण-गीतावली, रामचरितमानस, पार्वती-मंगल, विनय-पत्रिका, जानकी-मंगल, रामललानहछू, दोहावली, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञा-प्रश्न, सतसई, बरवै रामायण, कवितावली, हनुमानबाहुक

समाज सुधारक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका

- तुलसीदास जी को मध्यकालीन भारतीय समाज के एक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारक के रूप में देखा जा है।
- उन्होंने समाज के हित को ध्यान में रखते हुए एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे
- तुलसीदास जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति और प्रेम की भावना को समाज में फैलाया। रामचरितमानस के माध्यम से वे सामाजिक समर्थन को प्रोत्साहित करते हैं, जो एक सात्विक और नैतिक जीवन जीने का सिद्धांत मानते हैं।
- तुलसीदास की सामाजिक और लोकवादी दृष्टि मध्यकाल के अन्य कवियों से अधिक व्यापक थी
- उनके रचनाओं में मानवीय जीवन, नैतिकता, और समाज के विभिन्न पहलुओं को स्पष्टता से प्रस्तुत किया गया है।
- उनकी काव्य रचनाओं में सामाजिक न्याय और मानवअधिकारों के प्रति समर्पित भावना दिखाई गई है। उनका काव्य समाज में न्याय और समाजिक समृद्धि की ओर प्रेरित करता है।
- उनके काव्यों में नारी की सामाजिक और आत्मिक स्थिति पर सुधार की बातें उजागर की गई हैं।

- उनकी रचनाओं में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा दिया गया है। उन्होंने विद्या की महत्वपूर्णता को उजागर किया और समाज को जागरूक करने के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया।

संत रविदास

- रविदासजी मध्यकाल में एक भारतीय संत कवि सतगुरु थे।
- इन्हें संत शिरोमणि सत गुरु की उपाधि दी गई है।
- इन्होंने रविदासीया, पंथ की स्थापना की
- इनके रचे गए कुछ भजन सिख लोगों के पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भी शामिल हैं।
- रामानंदजी महाराज वैष्णव साधु थे वह भगवान श्री विष्णु जी की साधना किया करते थे

रविदासजी की प्रमुख रचनाएँ

- निरंजन देवा
- दरसन दीजै राम
- तुम्हारी आस
- पार गया
- तुम चंदन हम पानी
- मन ही पूजा

समाज सुधारक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका

- संत रविदास जी एक समाज सुधारक और आध्यात्मिक गुरु थे।
- संत रविदास जी ने ऊंच-नीच की भावना और ईश्वर-भक्ति के नाम पर होने वाले विवाद को सारहीन और निरर्थक बताया।
- उन्होंने सबको मिलजुलकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया।
- संत रविदास जी स्वयं मधुर और भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव-विभोर होकर सुनाते थे।
- उन्होंने जातिवाद, भेदभाव, और सामाजिक असमानता के ख़िलाफ़ लोगों को भी जागरूक किया।
- उनकी रचनाएं समाज को एकमुखी दृष्टिकोण के साथ देखने की प्रेरणा देती थीं और सभी वर्गों को एक समान रूप से देखने की आवश्यकता को उजागर करती थीं।
- उन्होंने सामाजिक सुधार के लिए भक्ति के माध्यम से सबको एक समान रूप से पूजने की महत्वपूर्णता को बताया।
- उनकी कविताएं महिलाओं के अधिकारों, सम्मान, और समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती हैं।

रविन्द्र नाथ टैगोर

टैगोर की दार्शनिक शिक्षाएँ न केवल साहित्यिक सुंदरता के कारण बल्कि उनमें निहित उच्च विचारों के कारण भी दुनिया भर में लोकप्रिय हुई।

उनके दर्शन के कुछ प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं-

- **भगवान** - टैगोर एक अद्वैतवादी हैं लेकिन शंकर की तरह नहीं हैं। निरपेक्ष एक व्यक्ति है, एक रचनात्मक व्यक्ति जो कार्य करता है और बनाता है, जिसे हम प्यार कर सकते हैं और प्यार कर सकते हैं। असीमित की सीमा ईश्वर का व्यक्तित्व है। ईश्वर सब कुछ है, लेकिन सब कुछ समान रूप से ईश्वर नहीं है। ईश्वर को सर्वोच्च व्यक्ति के रूप में महसूस करना हमारी नियति है, हमें स्वयं के वास्तविक स्वरूप को जानना होगा, जो कि ईश्वर के सच्चे प्रेम के माध्यम से भ्रम और अज्ञान पर काबू पाने के लिए ईश्वर के साथ एकता है।
- **प्यार** - प्यार ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण है। ज्ञान में, भेदों को या तो अलग रखा जाता है या एक दुर्लभ एकता में पूरी तरह से भंग कर दिया जाता है। लेकिन प्यार में, प्रेमी और प्रेमी प्रतिष्ठित होते हैं, फिर भी एकजुट होते हैं। प्रेम एकता और अंतर दोनों को बरकरार रखता है। सर्वोच्च व्यक्ति प्रेम के आनंद को महसूस करने के लिए मनुष्य का निर्माण करता है, जो तभी संभव है जब प्रेमी और प्रिय अलग-अलग प्राणी हों।
- **प्रकृति और मानव** - प्रकृति की रचना मनुष्य के घर के रूप में और एक उपकरण के रूप में भी की गई है, जो अपनी सुंदरता के माध्यम से मानव हृदय को जगाती है और उसे प्रिय (परम) की ओर निर्देशित करती है। जिस तरह एक कलाकार एक निश्चित मनोदशा (रस) को व्यक्त करने और जगाने के लिए कला का एक काम बनाता है, उसी तरह ईश्वर प्रकृति की दुनिया को इंसान में प्यार जगाने के लिए बनाता है। जिस तरह कमल की जड़ें कीचड़ में होती हैं, लेकिन उसका फूल साफ धूप में होता है, उसी तरह मनुष्य के पास आवश्यकता की दुनिया में एक सीमित ध्रुव होता है और दिव्यता की आकांक्षाओं में एक अनंत ध्रुव होता है।
- **ज्ञान** - सच्चा ज्ञान ब्रह्मांड के संबंध में चीजों का ज्ञान है, एक ऐसा ज्ञान जो भेदों को बनाए रखता है और फिर भी उन्हें उनकी एकता में पकड़ लेता है। मानव के पास ज्ञान के तीन स्रोत हैं जो इस प्रकार हैं-
  - इन्द्रियाँ- इन्द्रियों के द्वारा मनुष्य संसार को जानता है।
  - बुद्धि - मानव बुद्धि द्वारा विज्ञान और तर्क-केंद्रित दर्शन की खोज करता है।
  - भावना - मानव सर्वोच्च व्यक्ति को महसूस करके खोजता है।
- **साधना** - इसका अर्थ है जीवन की सच्ची अनुभूति जो स्वयं के प्रेम को दूसरों के प्रेम की ओर ले जाती है। ईश्वर से प्रेम करना द्वैत से एकता की ओर बढ़ते हुए पूरी सृष्टि से प्रेम करना है। आदर्श मनुष्य जीवन की मांगों को पूरा करता है और अपने सभी सामाजिक

दायित्वों को पूरा करता है। त्याग का मार्ग आदर्श नहीं है। उनके लिए जो पूरी तरह से संसार में लीन हैं और जो संसार को त्याग देते हैं, वे समान रूप से अभिशप्त हैं।

- **धर्म** - टैगोर ने मानवता के धर्म की वकालत की। मनुष्य को अपने धर्म के अनुसार जीना चाहिए। सच्चा धर्म प्रेम, सद्भाव, सादगी है। "जबकि भगवान अपने मंदिर के प्यार के निर्माण की प्रतीक्षा करते हैं, लोग पत्थर लाते हैं।" उन्होंने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और धार्मिक कट्टरता के खिलाफ भी लिखा। हमें सभी संकीर्ण सीमाओं से परे जाना चाहिए और उस दिन की ओर देखना चाहिए जब बुद्ध, क्राइस्ट और मोहम्मद एक हो जाएँगे।"
- **सामाजिक दर्शन** - मनुष्य को बाह्य रूप से प्रकृति से मुकाबला करने में और आंतरिक रूप से आध्यात्मिक रूप से विकसित होने में संलग्न होना चाहिए। टैगोर ने अपने समाज की बुराइयों जैसे गरीबी, अंधविश्वास, अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ी लेकिन पश्चिम को सभी बुराइयों का स्रोत नहीं पाया। उन्होंने व्यक्तिगत मूल्य, स्वतंत्रता और लोकतंत्र में पश्चिमी विज्ञान और पश्चिमी मान्यताओं का स्वागत किया। उनका मानना था कि राष्ट्रवाद देशभक्ति से अंधराष्ट्रवाद तक बिगड़ गया।
- **शिक्षा** - उनके विचार में, पारंपरिक स्कूल उन बच्चों को कैद करते हैं जो खुश रहने और दूसरों को खुश करने की शक्ति के साथ पैदा होते हैं। इसलिए, उन्होंने भारत के प्राचीन आश्रम विद्यालयों - शांतिनिकेतन (शांति का निवास) के बाद एक मॉडल-विद्यालय शुरू किया। स्कूल से एक बगीचा और एक हस्तशिल्प की दुकान जुड़ी हुई थी। उनके वृक्षारोपण कार्यक्रमों में उनकी पारिस्थितिक चिंताओं को प्रकट किया गया था। उन्होंने एक विश्वविद्यालय - विश्व भारती - की स्थापना करके अपनी शैक्षिक प्रतिबद्धता को भी विस्तृत किया, जहाँ उन्होंने विविधता में एकता की एक अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा दिया।

गाँधी और टैगोर - समानताएँ

- दोनों आधुनिकता के आलोचक हैं जो जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।
- वे दोनों मानव जाति के विशिष्ट चिह्न के रूप में जीवन के आध्यात्मिक आयाम पर जोर देते हैं।
- वे दोनों प्रकृति के साथ रहने की आवश्यकता पर जोर देते हैं और इस प्रकार वे पर्यावरण संरक्षण के लिए संघर्ष करते हैं।
- उन दोनों का अन्य संस्कृतियों और धर्मों से बहुत अधिक प्रभाव था। वास्तव में, उन दोनों की आलोचना की गई है कि उन्होंने अन्य धर्मों से कई अवधारणाएँ उधार ली थी।
- उनके विचार वास्तव में दर्शन और धर्म के भारतीय आदर्श की अभिव्यक्ति हैं, जिन्हें आधुनिक समय की जरूरतों को पूरा करने के लिए पुन- स्थापित किया गया है।

राजा राम मोहन राय

- "भारतीय पुनर्जागरण के जनक"।
- 1772 में बंगाल के एक छोटे से गाँव राधानगर में जन्म।
- वाराणसी में संस्कृत साहित्य और हिंदू दर्शन और पटना में फारसी, अरबी और कुरान का अध्ययन किया।
- महान विद्वान और अंग्रेजी, लैटिन, ग्रीक और हिब्रू सहित कई भाषाओं में महारत हासिल की।

राममोहन राय के सामाजिक सुधार

- **सती प्रथा समाप्त**- सती प्रथा के खिलाफ एक आंदोलन का आयोजन किया और विलियम बेंटिक को सती प्रथा को समाप्त करने वाला कानून पारित करने में मदद की (1829)।
- **शिक्षा**- आधुनिक पश्चिमी शिक्षा के शुरुआती प्रचारकों में से एक।
  - कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना (प्रेसीडेंसी कॉलेज)।
  - वेदाँत कॉलेज की स्थापना की।
  - नए विचारों के प्रसार के लिए स्थानीय भाषाओं के महत्व को पहचाना।
- **पत्रकारिता**
  - विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर जनता को शिक्षित करने के लिए बंगाली, फारसी, हिंदी और अंग्रेजी में पत्रिकाओं का प्रकाशन।
  - संवाद कौमुदी उनके द्वारा लाई गई सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका थी।
- **अंतर्राष्ट्रीयवाद**
  - अन्तर्राष्ट्रीयता में दृढ़ विश्वास।
  - अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में गहरी दिलचस्पी ली और स्वतंत्रता और राष्ट्रवाद का समर्थन किया।
  - 1823 में स्पेन में क्रांति की सफलता का जश्न मनाने के लिए एक सार्वजनिक रात्रिभोज का आयोजन किया गया।
- **धार्मिक सुधार**
  - तर्क दिया कि वेदों और उपनिषदों ने एकेश्वरवाद के सिद्धांत को बरकरार रखा।

- वेदों और पाँच उपनिषदों का बंगाली में अनुवाद किया।
- 1849 में फारसी में एकेश्वरवाद को उपहार लिखा।
- वेदाँत (उपनिषद्) के दर्शन में विश्वास करने वाला।
- 1829 में आत्मीय सभा (ब्रह्म समाज) की स्थापना की।
- ब्रह्म समाज ने मानवीय गरिमा पर जोर दिया, मूर्तिपूजा की आलोचना की और सती जैसी सामाजिक बुराइयों की निंदा की।
- जातिगत कठोरता का विरोध किया क्योंकि यह एकता को नष्ट करता है।
- युग की आवश्यकताओं के अनुरूप हिंदू धर्म को एक नए रूप में ढालना चाहता था।

वेदाँत का दर्शन

- वेदों पर आधारित प्राचीन आध्यात्मिक दर्शन → हिंदू धर्म का दार्शनिक आधार।
- वेदाँत के - अनुसार, ईश्वर अनंत अस्तित्व, अनंत चेतना और अनंत आनंद है।

वेदाँत निम्न कि पुष्टि करता है-

- अस्तित्व की एकता।
- आत्मा की दिव्यता।
- सभी धर्मों का सामंजस्य।

अहिल्याबाई होल्कर

- महारानी अहिल्याबाई होल्कर मराठा साम्राज्य की रानी थीं जिन्होंने मालवा राज्य पर शासन किया था।
- एक तीरंदाज के रूप में अपनी वीरता और कौशल के लिए जानी जाने वाली, उन्होंने कई लड़ाइयों में भील और गोंड जैसे विरोधियों के खिलाफ अपने राज्य की रक्षा की।
- अहिल्याबाई ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत-भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मन्दिर बनवाए, घाट बँधवाए, कुओं और बावड़ियों का निर्माण किया

समाज सुधारक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका

- अहिल्याबाई होल्कर एक समाज सुधारक और शिक्षाशास्त्री थीं
- अहिल्याबाई होल्कर का शासनकाल उनके असाधारण नेतृत्व, साहस और लोगों के कल्याण के प्रति समर्पण का प्रमाण है। आधारभूत संरचना के विकास, सामाजिक कल्याण और न्याय प्रशासन में उनका परिवर्तनकारी योगदान पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।
- अहिल्याबाई ने कई सामाजिक कार्य किए. उन्होंने लोगों के लिए कई सारी धर्मशालाएं बनवाईं, जो मुख्य रूप से तीर्थ स्थानों जैसे द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी का गंगा घाट, उज्जैन, नाशिक विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आसपास मौजूद हैं
- अहिल्याबाई ने व्यापारियों, किसानों और कृषकों को समृद्धि के स्तर तक बढ़ाने का समर्थन किया
- अहिल्याबाई ने न्याय को प्राथमिकता देने और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करने वाली एक निष्पक्ष और निष्पक्ष न्यायिक प्रणाली की स्थापना की।
- उन्होंने सामाजिक कल्याण, विधवाओं, अनाथों और समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- अहिल्याबाई होल्कर कला और संस्कृति की एक महान संरक्षक थीं, उन्होंने संगीतकारों, कलाकारों और विद्वानों का समर्थन किया, इस प्रकार एक जीवंत सांस्कृतिक वातावरण को बढ़ावा दिया।
- होलकर परिवार अपने निजी खर्चों को पूरा करने के लिए सार्वजनिक धन का उपयोग नहीं करने के लिए जाना जाता था।
- अहिल्या ने कभी भी सार्वजनिक धन का उपयोग व्यक्तिगत और पारिवारिक खर्चों के लिए नहीं किया और अपने निजी संसाधनों से धन दान में दिया।

सावित्रीबाई फुले

- महात्मा ज्योतिराव फुले की पत्नी जिन्होंने उन्हें घर पर ही शिक्षा दी।
- 1850 के दशक में, फुले दंपत्ति ने दो शैक्षिक ट्रस्टों की शुरुआत की- नेटिव फीमेल स्कूल, पुणे और द सोसाइटी फॉर प्रोमोटिंग द एजुकेशन ऑफ महार, माँग और आदि।
- 1854 में काव्या फुले और 1892 में बावन काशी सुबोध रत्नाकर का प्रकाशन हुआ।
- 1852 में, महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए महिला सेवा मंडल की शुरुआत की।
- विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करते हुए बाल विवाह के खिलाफ अभियान चलाया।
- 1873 में पहली बार सत्यशोधक ने बिना दहेज, ब्राह्मण पुजारियों या ब्राह्मणवादी रीति-रिवाजों से शादी की।

स्वामी दयानंद सरस्वती

- मूल शंकर तिवारी।
- आर्य समाज की स्थापना 7 अप्रैल 1875 ई.।
- 1876 में स्वराज को "भारतीयों के लिए भारत" के रूप में बुलाने वाले पहले व्यक्ति।
- श्री अरबिंदो और एस राधाकृष्णन ने उन्हें "आधुनिक भारत के निर्माताओं" में से एक कहा।

- वेदों के अचूक अधिकार में विश्वास करते थे।
- कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत की वकालत की।
- ब्रह्मचर्य और ईश्वर के प्रति समर्पण सहित ब्रह्मचर्य के वैदिक आदर्शों पर जोर दिया।
- भारतीय धर्मग्रंथों की शिक्षा और पढ़ने के संबंध में महिलाओं के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा दिया।
- प्रमुख योगदान सत्यार्थ प्रकाश का है।
- अन्य पुस्तकों में संस्कार विधि, ऋग्वेद भाष्यम शामिल हैं।
- भारतीय छात्रों को एक अद्यतन पाठ्यक्रम शिक्षण प्रदान करने के लिए एंग्लो-वैदिक स्कूलों की शुरुआत की
- समकालीन अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ वेदों का ज्ञान।
- महर्षि की उपाधि दी गई और उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता माना जाता है।
- व्यक्तियों को हिंदू धर्म में वापस लाने के लिए शुद्धि आंदोलन की शुरुआत की गई थी।

स्वामी विवेकानंद

उनका जन्म कलकत्ता में हुआ था और वे रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। 1893 में, उन्होंने शिकागो में विश्व धर्म संसद को संबोधित किया।

विवेकानंद का दर्शन

- विवेकानंद एक आदर्शवादी हैं क्योंकि वे परम वास्तविकता को आध्यात्मिक मानते हैं।
- वास्तविकता एक पूर्ण ब्रह्म है जो स्थान, समय और कार्य-कारण से परे है और वही वास्तविकता जिसे धार्मिक दृष्टि से देखा जाता है वह है ईश्वर।
- ईश्वर - ईश्वर को पूरी तरह से अस्वीकार करना असंभव है क्योंकि ईश्वर को दुनिया और आत्मा दोनों के लिए आवश्यक समर्थन और आधार माना जाता है। विवेकानंद की शिक्षाओं से भगवान के अस्तित्व के लिए कुछ तर्क इस प्रकार हैं-
    - **डिजाइन से तर्क** - दुनिया की विशालता, सद्भाव और भव्यता हमें यह मानने के लिए प्रेरित करती है कि ब्रह्मांड का एक बुद्धिमान डिजाइनर, एक वास्तुकार होना चाहिए।
    - **कार्य-कारण से तर्क** - ब्रह्मांड में सब कुछ एक कारण और एक प्रभाव है। यह कारण श्रृंखला एक अंतिम कारण की ओर ले जाती है, जो अकारण कारण (ईश्वर) है।
    - **एकता से तर्क** - ब्रह्मांड सभी चीजों की एक आवश्यक एकता को व्यक्त करता है। जो चीजें एक दूसरे से बहुत अलग दिखती हैं, वे वास्तव में और मूल रूप से एक ही हैं। एकता का यह तथ्य सभी चीजों के सबसे अंतर्निहित और एकीकृत सिद्धांत को प्रकट करता है, अर्थात् ईश्वर।
    - **प्रेम से तर्क** - प्रेम में प्रेम की वस्तु में स्वयं को खोजना शामिल है। प्रेम के कार्य में 'मैं' और 'तू' का भेद मिट जाएगा। निष्कर्ष यह है कि हर चीज के पीछे की वास्तविकता सिर्फ एक है, प्रेम का सर्वोच्च सिद्धांत ईश्वर है।
    - **शास्त्रों के अधिकार से तर्क** - जब तक हम ईश्वर को जानने और महसूस करने में सक्षम नहीं हैं, हम स्वयं को शास्त्रों के अधिकार पर आधारित कर सकते हैं और ईश्वर के बारे में शिक्षा देने में उनके अधिकार पर भरोसा कर सकते हैं।
    - **सादृश्य से तर्क** - वह व्यक्ति एक तस्वीर का आनंद लेता है जो इसे खरीदने और बेचने के इरादे से देखता है। इसी तरह, संपूर्ण ब्रह्मांड ईश्वर का चित्र है, जिसका आनंद मनुष्य तब ले सकता है जब उसकी सभी इच्छाएँ गायब हो जाएँगी।
    - **अंतर्ज्ञान से तर्क** - यदि कोई कठोर धार्मिक अनुशासन और ध्यान के मार्ग का अनुसरण करने के लिए तैयार है, तो प्रत्येक मनुष्य में अंतर्ज्ञान के माध्यम से सीधे ईश्वर का अनुभव करने की क्षमता होती है। तर्कसंगत 'सबूत' की आवश्यकता केवल तब तक होती है जब तक प्रत्यक्ष दृष्टि (अंतर्ज्ञान) रखने की क्षमता विकसित नहीं होती है।
- **संसार** - संसार ईश्वर की रचना है जो सीमित रूपों में सृष्टिकर्ता की अभिव्यक्ति है। निरपेक्ष समय, स्थान और कार्य-कारण से गुजरते हुए ब्रह्मांड बन गया है।
- **माया** - माया रचयिता की शक्ति है। यह परिवर्तन का सिद्धांत है जो सृजन को संभव बनाता है। यह उस विरोधाभास के तथ्य को दर्शाता है जिसे ब्रह्मांड इतनी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, जहाँ कहीं अच्छा है, वहाँ बुराई है। जहाँ जीवन है, वहाँ मृत्यु है आदि। माया न तो अस्तित्व है और न ही गैर-अस्तित्व, बल्कि निरपेक्ष होने और गैर-अस्तित्व के बीच में कुछ है।
- **मानव** - मानव भौतिक और आध्यात्मिक सत्ता की एक संगठित एकता है।
- मानव शारीरिक रूप से अन्य सभी जानवरों से श्रेष्ठ है क्योंकि मानव की भौतिक प्रकृति बेहतर संगठित है और अधिक एकता प्रदर्शित करती है। मनुष्य की भौतिक प्रकृति की यह विशिष्टता व्यक्ति में आध्यात्मिकता की उपस्थिति के कारण भी है।

- **स्वतंत्रता और कर्म** - मनुष्य की वास्तविक प्रकृति स्वतंत्रता है जो आत्मा का सार है। स्वतंत्रता का अर्थ 'अनिर्णय' बिल्कुल नहीं है बल्कि इसका अर्थ है आत्मनिर्णय जिसमें मुक्त एजेंट किसी और चीज से नहीं बल्कि स्वयं द्वारा निर्धारित किया जाता है। इस तरह, स्वतंत्रता और कर्म अब एक दूसरे के साथ असंगत नहीं रहते। व्यक्ति के स्वयं के कार्य भविष्य के लिए फल देने वाली प्रवृत्तियों का निर्माण करते हैं। कर्म मानव की स्वतंत्रता का खंडन नहीं करता है क्योंकि अंतिम पलायन अंततः अपने स्वयं के कार्यों पर निर्भर करता है। अपने स्वयं के अच्छे कर्मों से व्यक्ति अपनी अज्ञानता और पीड़ा पर विजय प्राप्त कर सकता है अर्थात् मनुष्य मूल रूप से स्वतंत्र है।
- **अमरता** - विवेकानंद स्वीकार करते हैं कि आत्मा की अमरता का सटीक और वैज्ञानिक प्रदर्शन देना संभव नहीं है। आत्मा मृत्यु से बच जाती है जो पुनर्जन्म का रूप धारण कर लेती है और अंत में अमरता की प्राप्ति होती है। वास्तविक अमरता तभी प्राप्त की जा सकती है जब जन्म और पुनर्जन्म के 'चक्र' को रोक दिया जाए। अमरता के कुछ प्रमाण निम्नलिखित हैं-
    - **आत्मा की सरलता** - आत्मा अमर है क्योंकि यह सरल है। सरलता जटिलता का अभाव है। जो विनाश के लिए उत्तरदायी है वह निरपवाद रूप से कुछ जटिल है।
    - **अनंत क्षमताएं** - मानव के पास हर उस कार्य से परे जाने की क्षमता है जिसका सामना करना पड़ता है।
    - **मुक्ति की लालसा** - मृत्यु से मुक्ति की हमारी तड़प अमरता की निशानी है। अमरता की हमारी इच्छा ही अमरता का प्रमाण है।

मुक्ति और साधन - योग के अभ्यास से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। विवेकानंद ने योग के निम्नलिखित चार सेट प्रस्तावित किए हैं -

- **कर्म-योग** - काम मजबूरी से नहीं बल्कि कर्तव्य की भावना से किया जाता है। कर्मयोगी एक स्वतंत्र प्राणी के रूप में कार्य करता है, सभी स्वार्थों से अनासक्त। ऐसा कर्म ज्ञान की ओर ले जाता है, जो बदले में मुक्ति लाता है।
- **भक्ति-योग** - यह प्रेम में भगवान की एक वास्तविक खोज है जो बढ़ती है और सर्वोच्च भक्ति ग्रहण करती है जिसमें सभी रूप और कर्मकांड गायब हो जाते हैं। भक्ति-योग में, व्यक्ति अपनी भावनाओं और भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए प्रशिक्षित होता है और आत्मा को ईश्वर की ओर उच्च और उच्च दिशा देता है।
- **ज्ञान-योग** - ज्ञान-योग में शरीर की सारी ऊर्जा को ज्ञान की दिशा में एकाग्र किया जा सकता है। समय के साथ, यह एकाग्रता और अधिक तीव्र हो जाएगी और व्यक्ति पूर्ण एकाग्रता के चरण को प्राप्त कर सकता है। इस स्तर पर, स्वयं और ब्रह्म के बीच का अंतर भी मिट जाएगा।
- **राजयोग** - यह उच्च आत्मा के साथ निम्न आत्मा के रहस्यवादी मिलन के माध्यम से प्राप्ति की विधि है। यह मन की गतिविधियों को रोकता है और मन की गतिविधियों की समाप्ति के साथ, लगाव और बंधन गायब हो जाता है। जब कोई व्यक्ति समाधि या अतिचेतन अवस्था में जाता है, तो वह एक ऋषि के रूप में सामने आता है और आध्यात्मिक और पारलौकिक ज्ञान प्राप्त करता है।

धर्म की उत्पत्ति और प्रकृति

- धर्म की उत्पत्ति मनुष्य के इन्द्रियों से परे जाने के प्रयास में होती है।
- धर्म की प्रकृति को धार्मिक भावना का विश्लेषण करके जाना जा सकता है, जो इसमें तीनों तत्वों के साथ सार्वभौमिक रूप से मौजूद है - संज्ञानात्मक तत्व, भावना तत्व और रचनात्मक तत्व।
- धर्म की प्रकृति का निर्धारण एक तत्व की दूसरे पर प्रधानता से होता है।
- उदाहरण के लिए, जहाँ भावना की प्रधानता होती है, धर्म रहस्यमय हो जाता है। जहाँ ज्ञान पर जोर है, वहाँ धर्म बौद्धिक और अमूर्त है और जहाँ वात्सल्य तत्वों की प्रधानता होती है, वहाँ धर्म व्यावहारिक और कर्मकांड बन जाता है।

धर्म के लक्षण

- **अलौकिक सामग्री** - अलौकिक सामग्री एक धर्म को उसकी विशिष्टता प्रदान करती है और इसे अन्य सभी प्रकार के विषयों से अलग करती है।
- **अतिक्रमण** - धर्म न केवल इंद्रियों की सीमाओं से परे है, बल्कि तर्क की शक्ति या शुद्ध बौद्धिक विचार-विमर्श से भी परे है।
- **एब्स्ट्रैक्शन** - धार्मिक तथ्य कमोबेश ऐसे अमूर्त होते हैं जो सुपरसेंसिटिव होते हैं, जैसे- 'आदर्श एकता', 'मानवता का आदर्श' इत्यादि।
- **अध्यात्म का जागरण** - यह कहना कि धर्म एक आध्यात्मिक जागृति है, इस बात पर जोर देना है कि यह